हिंदी और हम

विद्यानिवास मिश्र

कितने लोग नई उम्रवाले तैयार होगे एक हारी हुई लडाई लडने के लिए ललकारने के लिए—हमे नहीं चाहिए हिदी का प्रतिबधित सवैधानिक दरजा, हमे हिदी का अधिकार चाहिए ? वह अधिकार पैतृक नही, मातृक है। आकाश से पृथ्वी बडी होती है, पिता से माता बडी होती है। हिदी जिनके लिए माँ नही है उनके लिए क्या विधान हो, वे जाने, पर जिनके लिए हिदी के अतिरिक्त कोई माँ नही है, जिनके पास हिदी के अलावा कोई दाई माँ नही नई माँ नही उनके स्वरूप को कोई क्यो छीनता है ? कितने आदमी तैयार मिलेगे अपने भविष्यत् अधकार को अपनी मज्जा की ऊर्जा से जलाए मशाल से चीरने के लिए ? कितने आदमी तैयार मिलेगे इस बात पर जेल भरने के लिए कि हिदी मे जिस वस्तु का नाम न लिखा हो उसे नही खरीदेगे, हिदी मे निमत्रण न आए तो उस निमत्रण को अस्वीकार करने के लिए ?

कुछ पानीदार पत्रकार, लेखक अध्यापक, छात्र, अधिकारी, किसान, मजदूर, डॉक्टर, इजीनियर, मिस्त्री अपने-अपने क्षेत्र मे हिदी के पानी का मान रखने को सन्नद्ध हो जाएँ तो हिदीभाषी इस देश मे द्वितीय श्रेणी के नागरिक न रह जाएँ। हिदी के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान का विकास करनेवाला व्यक्ति विद्या-जगत् से अस्पृश्य न रह जाए। हिदी मे काम करनेवाला बाबू लल्लू न रह जाए। एक-दूसरे का मुँह जोहेगे तो लडाई नही लडी जा सकेगी, क्योकि इस मुँहामुँही मे हिदीभाषी गूँगा हो गया है।

—इसी पुस्तक से